सामाजिक विज्ञान में सीखना–सिखाना

प्रिया जायसवाल

सामाजिक विज्ञान, ख़ासकर इतिहास में तथ्यों की पड़ताल कैसे करें? लेखिका कहती हैं कि लम्बे समय में हुए बदलाव को जानने का एक तरीक़ा अवलोकन हो सकता है। उस समय मौजूद लोगों से बातचीत कर तथ्यों को इकट्ठा करना इसका एक अन्य तरीक़ा हो सकता है। इस तरह के अवलोकन और बातचीत के लिए क्या करना है, किस तरह के प्रश्न पूछने हैं, यह तैयारी ज़रूरी है। प्राप्त तथ्यों की जाँच भी इसका ज़रूरी पहलू है। इसके लिए हमें देखना होगा कि एकत्र किया गया डेटा सही है या नहीं, या किस हद तक सही है, और इसके लिए फिर अन्य स्रोतों व सन्दर्भों की मदद भी लेनी पड़ सकती है। –सं.

पृष्ठभूमि

तथ्यों का एकत्रीकरण, अवलोकन, विश्लेषण एवं दस्तावेज़ीकरण, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन विषय के महत्त्वपूर्ण शिक्षण अभ्यास हैं। इन अभ्यासों में यह गुंजाइश है कि बच्चे और शिक्षक, दोनों साथ मिलकर विभिन्न तरीक़ों के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के भागीदार बन सकते हैं। इनमें पाठ्यपुस्तकों के इतर भी बच्चों के पास सीखने–समझने के अवसर होते हैं, जहाँ वे स्वयं से अपने ज्ञान का सृजन कर सकते हैं और उसे विस्तार दे सकते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में भी यह अपेक्षा की गई है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* इस बात की अनुशंसा करती है कि बच्चों के समग्र विकास में अनुभवजनित शिक्षण की बहुत महत्ता है। नीति इस बात की भी पैरवी करती है कि बच्चों का सीखना आनन्ददायी हो और सीखने–सिखाने की प्रक्रियाएँ उन्हें इंगेज करने वाली हों। इनमें बच्चों के पास खोजने के अवसर हों। स्कूल विज़िट के दौरान कक्षा अवलोकनों एवं विभिन्न मंचों पर शिक्षकों के साथ बातचीत करने पर हमारी यह समझ बनी कि कई बार बच्चों को इस विषय की अवधारणाएँ जटिल और अमूर्त प्रतीत होती हैं, जिससे विषय के प्रति नीरसता बढ़ने लगती है। साथ ही सामाजिक विज्ञान विषय की मूल दक्षताओं, जैसे– पाठ्यसामग्री का विश्लेषण, समय और स्थान के सम्बन्ध में सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करने की क्षमता, समालोचनात्मक चिन्तन, विविधता का





सम्मान एवं संवेदनशीलता, आदि पर शिक्षकों के साथ काम करने की बेहद ज़रूरत है।

इसी सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों के लिए अनुभवजनित शिक्षण पर काम करने की योजना बनाई गई। इसमें उन्हें किसी स्थान विशेष के बारे में, अवलोकन के माध्यम से, आसपास के लोगों से बातचीत करके अपनी समझ को और विस्तार देना था। लक्ष्य यह था कि शिक्षकों के साथ यह चर्चा, उन्हें अपनी कक्षाओं में इस विषय की प्रकृति पर बेहतर समझ बनाते हुए बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को ठीक से नियोजित करने में मदद करेगी। साथ ही यह गतिविधि, पाठ्यपुस्तकों की सामग्री का विश्लेषण करने में शिक्षकों के लिए उपयोगी होगी। रविवार के स्वैच्छिक सत्रों और ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन कार्यशालाओं में इसे एक महत्त्वपूर्ण घटक बनाया गया। इस पूरी प्रक्रिया में उद्देश्य यह भी था कि शिक्षक किसी भी जानकारी या तथ्य को एकत्रित करने की प्रक्रिया, तथ्य जुटाने में स्थानीय लोगों की भूमिका और इस सबके विश्लेषण से गुज़र सकें। इस तरह देहरादून शहर के अलग-अलग स्थानों, जैसे– पलटन बाज़ार, क्लॉक टावर, नगर निगम, आदि का शैक्षिक भ्रमण शिक्षकों द्वारा किया गया। अलग-अलग जगहों व व्यक्तियों से डेटा एकत्र करने का उद्देश्य यह था कि हम एकत्र किए गए डेटा की सत्यता की जाँच कर पाएँ, और देख पाएँ कि प्राप्त जानकारी सही है या नहीं, और सही है तो किस हद तक।

तैयारी एवं तथ्यों को जुटाना

तैयारी के रूप में पहले शिक्षकों के बीच सन्दर्भ रखा गया, जिसमें सामाजिक विज्ञान शिक्षण की प्रक्रियाओं व कौशलों पर चर्चा की गई। इस चर्चा के साथ ही विषयवस्तु के अनुसार शिक्षकों के समूह बनाए गए। उदाहरण के लिए, एक समूह को देहरादून के धार्मिक स्थल झण्डा साहिब की जानकारी जुटाने के लिए बाज़ार का अवलोकन एवं वहाँ लम्बे समय से रह रहे व्यक्तियों से बातचीत करने की और दूसरे समूह को झण्डा साहिब के पण्डितजी के साक्षात्कार की ज़िम्मेदारी दी गई। इस प्रक्रिया हेतु सर्वप्रथम दोनों ही समूहों ने बातचीत एवं साक्षात्कार हेतु कुछ प्रश्न तैयार किए। बाज़ार में लोगों के साथ बातचीत के प्रश्न कुछ इस प्रकार थे :

आपकी दुकान कब से है; तब से आज तक आपकी दुकान में सामान, संरचना, मानवीय संसाधन आदि के लिहाज़ से किस-किस तरह के बदलाव आए हैं; विशेषकर स्थानीय मेले के समय आपकी आर्थिक आमदनी पर क्या प्रभाव पड़ता है; आदि।

इसी तरह पण्डितजी के साथ बातचीत के भी कुछ सवाल इस प्रकार तय किए गए : शुरुआती दौर से लेकर अभी तक यहाँ की व्यवस्थाओं में किस तरह का परिवर्तन आया है; चार कोनों में बने चार मन्दिरों के पीछे का क्या इतिहास है; आदि।

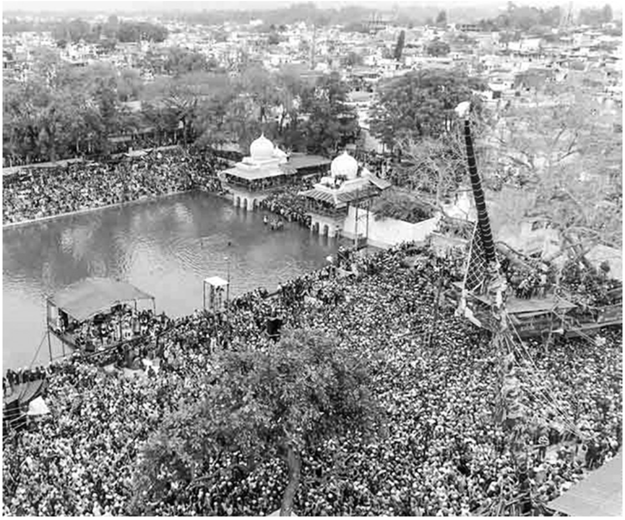
पलटन बाज़ार का इतिहास जानने हेतु भी अलग-अलग समूह बनाए गए। एक अन्य समूह नगर निगम से जानकारी जुटाने के लिए भी था। इस तरह शिक्षकों ने विषयानुसार स्वयं से प्रश्नावली तैयार कर अपने-अपने समूहों में

स्थानीय लोगों से बातचीत करके जानकारी जुटाई। परिस्थिति के मुताबिक़ और बातचीत में निरन्तरता बनाए रखने के लिए शिक्षक प्रश्नों में कमी-बढ़ोतरी भी करते रहे। विभिन्न स्थानों में अलग-अलग व्यक्तियों से जानकारी एवं तथ्य जुटाने की इस प्रक्रिया के पहले तैयारी के रूप में उस स्थान पर जाकर वहाँ का अवलोकन किया गया और जिन लोगों से बातचीत करनी थी, उनकी सहमति ली गई, ताकि जिस दिन यह देखने जाने की योजना बनाई गई थी उस दिन यह सहज तरीक़े से लागू की जा सके।

शिक्षकों द्वारा एकत्रित जानकारी को पुष्ट करने की प्रक्रिया में सभी समूहों द्वारा प्राप्त जानकारी को बड़े समूह में साझा किया गया। बड़े समूह में जानकारी साझा करने से पहले उस समूह ने अपने समूह में प्राप्त जानकारी को व्यवस्थित करते हुए दर्ज किया और इसकी एक संक्षिप्त रिपोर्ट बनाई। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षकों के अनुभव काफ़ी रोचक थे। उदाहरण के लिए, प्राप्त जानकारियों में कुछ ऐसी थीं, जिनमें सभी समूहों द्वारा प्राप्त किए गए तथ्यों में समानता थी, पर कहीं-कहीं भ्रम की स्थिति भी बनी। ऐसे में यह चर्चा की गई कि इस जानकारी को और टटोलने की कोशिश की जाएगी। बहुत-सी ऐसी बातें थीं जो सभी के लिए रोचक थीं। जैसे– मोची गली, जिसका नाम अब श्री गुरु राम राय मार्केट हो गया है, क्षेत्र का व्यस्ततम बाज़ार है। वहाँ पहले एकमात्र दुकान जूतों के व्यवसायी श्री गंगा राम की थी। फ़िलहाल अब उसी स्थान पर होलसेल प्लास्टिक के सामान की दुकान है। 'मोची गली' नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि यहाँ पहले ज़्यादातर मोची ही रहा करते थे। इसी तरह 'घोसी गली' को लेकर यह जानकारी मिली कि यहाँ ग्वाले रहा करते थे। हमें मालूम हुआ कि लम्बे अन्तराल में इस जगह पर बहुत-से परिवर्तन हुए और ज़रूरतों के हिसाब से नई दुकानें खुलती गईं।

इस प्रक्रिया में यह भी समझने में मदद मिली कि चूँकि लोगों के विचार उनके अनुभवों से प्रभावित होते हैं, इसलिए उनका दृष्टिकोण उनके द्वारा दी गई जानकारी को प्रभावित करता है। जैसे– झण्डा साहिब मेले के समय बाज़ार में लोगों की आर्थिक आमदनी में कोई फ़ायदा होता है या पहले और अब तक झण्डा साहिब मेले में किस तरह के परिवर्तन आए हैं, इसको लेकर अलग-अलग लोगों के जवाब अलग-अलग थे। बड़े व्यापारियों का कहना था कि कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ा, क्योंकि उनकी दुकानों से संगतें अभी भी काफ़ी सामान ख़रीदती हैं। दूसरी तरफ़, एक चाय की दुकान के मालिक का कहना था कि पहले जब संगतें आती थीं, तब लोग बाज़ार में घूमते थे, चीज़ें ख़रीदते थे, बाहर ही खाना-पीना होता था, और कई दिनों तक लंगर चलते थे, पर अब संगतें अन्दर दरबार में ही रहती हैं, वहीं भण्डारा लग जाता है। इसलिए आसपास बाज़ारों व दुकानों में कम ही लोग आते हैं तो बिक्री कम होती है। कपड़ों की दुकान के व्यापारी ने बताया कि मेले के दौरान आय में वृद्धि के स्थान पर उनकी आय कम हो जाती है क्योंकि जो लोग मेले में आते हैं वे कपड़े लेना पसन्द नहीं करते और भीड़ के कारण उन्हें अपनी दुकान को बन्द रखना पड़ता है। इस





3-4 हज़ार लोग आते थे और कुम्भ के वर्षों में यह संख्या 10 हज़ार तक पहुँच जाती थी। यह भी ज्ञात हुआ कि झण्डा साहिब मेला सामान्यतः गुरु राम राय के जन्मदिन, होली के पाँचवें दिन, पर लगता है। यहाँ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड से श्रद्धालु आते हैं।

बातचीत से पता चलता है कि सामाजिक सच का एक ही पहलू नहीं होता। अगर एक ही पक्ष की बात को दर्ज किया जाए तो सच की पूरी तस्वीर नहीं बन सकेगी।

इस तरह की बातचीत में लोगों की धार्मिक आस्थाएँ भी जुड़ी होती हैं, जिन्हें संवेदनशीलता के साथ अन्य तथ्यों से सम्बन्ध स्थापित करते हुए टटोलने की ज़रूरत होती है। लोगों की आस्था, दुकानों में आए बदलाव, आदि के साथ इस जगह की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारियाँ बातचीत में उभरकर आईं। जैसे, इस जगह पर पहले भी बाहर खाना खाने का प्रचलन बहुत था, इसलिए खाने की दुकानें लगातार रहीं। यह भी पता लगा कि पहले पहाड़ी राजमा, पहाड़ी दालें जैसे स्थानीय अनाज काफ़ी आते थे, पर अब बाज़ार में इनकी पहुँच काफ़ी कम हो गई है। बातचीत में जानकारी मिली कि इस जगह को स्थापित करने वाले गुरु राम राय किरतपुर से चलकर 1676 में केदारखंड (देहरादून का पुराना नाम) पहुँचे और यहाँ अपना मठ बनाया। यह भी पता लगा कि गुरु राम राय को औरंगज़ेब के कहने पर टिहरी के राजा ने कई गाँव दान में दिए थे। इसका उल्लेख जी आर सी विलियम्स की किताब *मेमोरियल्स ऑफ़ देहरादून* में मिलता है। इस किताब के अनुसार, 1874 में इस मेले में 3-4 हज़ार लोग आते थे और कुम्भ के वर्षों में यह संख्या 10 हज़ार तक पहुँच जाती थी।

शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

सभी शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया में सहभागी रहे और उन्हें यह गतिविधि काफ़ी अच्छी लगी। इस पूरी प्रक्रिया में वे अपने स्थानीय इतिहास से परिचय बढ़ा सके। वे इतिहास को बनाने और उसे प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा कर सके और समय के साथ बाज़ार में आए बदलावों का अवलोकन करते हुए इसके विश्लेषण तक पहुँचे। शिक्षकों ने समूह में बातचीत करते हुए अपने समाज की समझ को एक प्रक्रिया के रूप में देखा। वे देख सके कि समाज में कई क़िस्म की अन्त:क्रियाएँ चलती रहती हैं और इसमें आमतौर पर प्रचलित अवधारणाओं के साथ ही उनसे अलग और कई बार उनकी विरोधी धारणाएँ भी दिखाई देती हैं। इसलिए ज़रूरत इन अवधारणाओं को समझने और उनपर विचार करने की है। कक्षा-कक्ष के भीतर और बाहर बच्चों के साथ इन अनुभवों के आलोक में चर्चा की जा सकती है और इन्हीं चर्चाओं से सामग्री के विश्लेषण के नए रास्ते निकल सकते हैं। इसी प्रक्रिया में किसी समय व स्थान में होने वाली सामाजिक परिघटनाओं की व्याख्या करने की क्षमता एवं समालोचनात्मक चिन्तन की तरफ़ बढ़ा जा सकता है और विविधता का सम्मान व संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को पुष्ट किया जा सकता है।

बच्चों के साथ किया जाने वाला काम

इस तरह की प्रक्रिया स्कूल में बच्चों के साथ की जा सकती है। शिक्षक पहले किसी स्थान का चयन करें। उस स्थान के बारे में

कुछ प्रश्न तैयार करें। जैसे– पहले वहाँ क्या था, या किसी गाँव या बस्ती में क्या बदलाव आए, आदि। बच्चों को इस विषय पर प्रोजेक्ट कार्य दिए जाएँ। उनके समूह बनाकर उन्हें प्रश्न बनाने को प्रेरित करें कि वे गाँव या किसी स्थान विशेष के बारे में क्या-क्या जानना चाहते हैं और यह जानकारी उन्हें गाँव के किन व्यक्तियों से मिलेगी। प्रश्न बनाने में शिक्षक बच्चों की मदद कर सकते हैं और उन्हें अलग-अलग आयामों पर सोचने में सहायता कर सकते हैं। बच्चे समूह में भी अपने लिए प्रश्नों का निर्माण कर सकते हैं। इसके अलावा, शिक्षक पाठ्यपुस्तकों से इस तरह की विषयवस्तु का चयन कर सकते हैं जिसमें आसपास के स्थानों के भ्रमण और स्थानीय लोगों से बातचीत के मौक़े हों। इस तरह विद्यार्थी बाहरी दुनिया से पाठ्यपुस्तक का जुड़ाव समझ पाएँगे। उदाहरण के लिए, 'सरकार' की अवधारणा में 'स्थानीय शासन' को समझने के लिए बच्चों को अपने गाँव की पंचायत, ग्राम सभा, नगरपालिका या नगर निगम का भ्रमण करवाया जा सकता है, और वहाँ की कार्यप्रणाली को बेहतर समझने के लिए सन्दर्भित व्यक्तियों से बातचीत एवं साक्षात्कार करवाकर जानकारी एकत्रित करने को कहा जा सकता है। यह भी ज़रूरी होगा कि शिक्षक इस तरह की गतिविधि की पूर्व तैयारी अपने स्तर से कर लें। जिस स्थान पर विज़िट करनी है, जिन लोगों से बातचीत करनी है, उनसे पहले समय ले लिया जाए ताकि नियत दिन किसी तरह की असुविधा न हो। इस प्रकार चयनित मुद्दे / अवधारणा की प्रकृति के अनुसार शिक्षक बच्चों के लिए अनुभवजनित शिक्षण की योजनाएँ बना सकते हैं और बच्चों को अवलोकन करने, किसी विषय पर आसपास के लोगों से पूछताछ कर ख़ुद से जानकारी एकत्रित करने और उस जानकारी का विश्लेषण करने के मौक़े दे सकते हैं। जब बच्चे अपनी जानकारी एकत्रित करके ले आएँ, तब उन्हें उस जानकारी को व्यवस्थित करने के लिए कहा जाए। बड़े समूह में उस



जानकारी का प्रस्तुतिकरण हो और बच्चों के पास एक दूसरे से सवाल-जवाब करने के मौक़े हों। इस तरह बच्चों में जानकारी को व्यवस्थित कर विभिन्न तरीक़ों से दर्ज कर पाने के अवसर होंगे। इससे उनमें विश्लेषण करने, तर्क करने एवं अभिव्यक्ति की क्षमताओं का विकास होगा।

इस प्रक्रिया के द्वारा सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन विषय की सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को नए आयाम मिलेंगे। बच्चों में स्वयं से जानकारी को एकत्रित कर उसका विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होगा। साथ ही, यह विषय नीरस और उबाऊ प्रकृति का है, ऐसी पूर्व धारणाओं को भी दूर करने के अवसर बनेंगे।

प्रिया जायसवाल 12 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। विभिन्न सेवापूर्व एवं सेवाकालीन शिक्षक क्षमता संवर्धन कार्यक्रमों से जुड़ाव है। वर्तमान में, वे देहरादून में परिवेशीय अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान की रिसोर्स पर्सन हैं।

सम्पर्क : priya.jaiswal@azimpremjifoundation.org